ISSN2321-5372

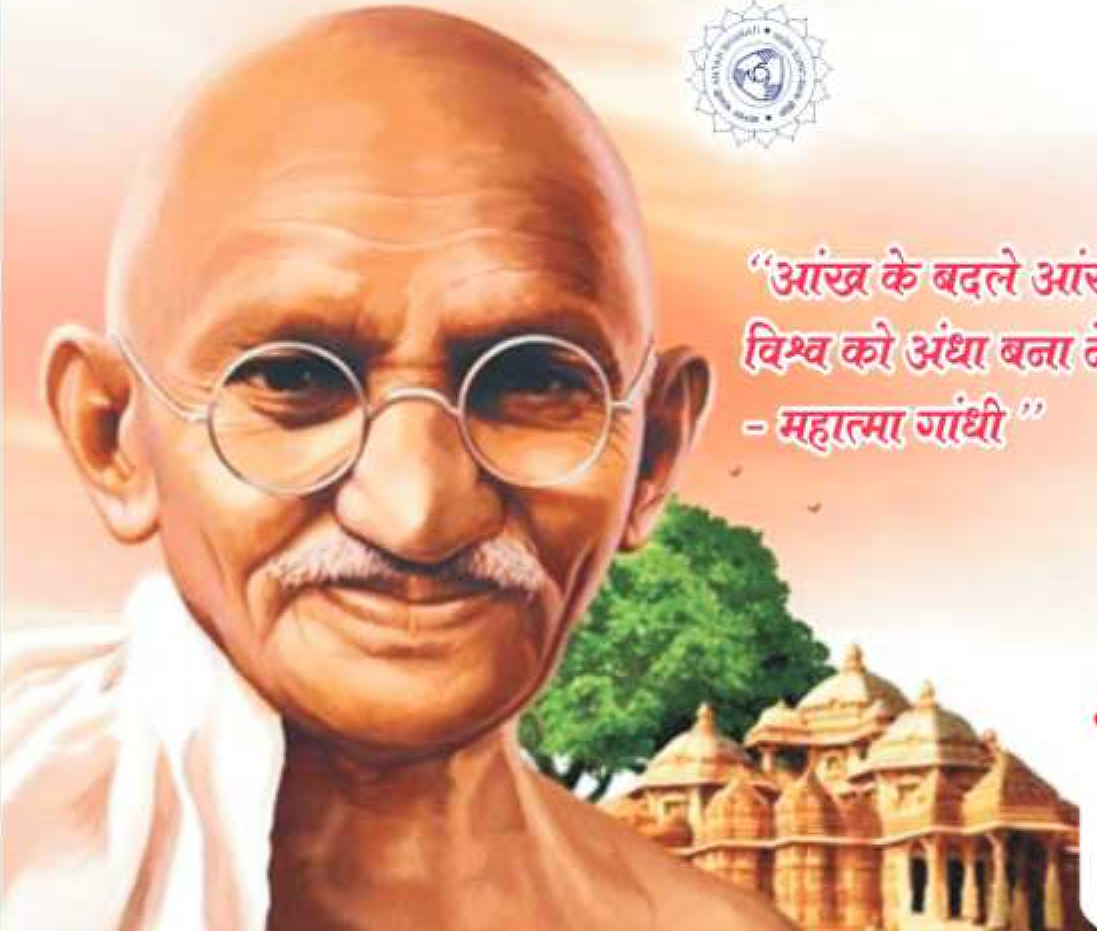

"आंख के बदले आंख पूरे विश्व को अंधा बना देगी।
- महात्मा गांधी"

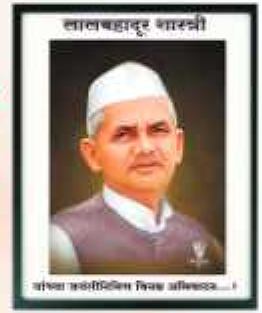

"देश की तरक्की के लिए हमें आपस में लड़ने के बजाय गरीबी, बीमारी और अज्ञानता से लड़ना होगा।"

आंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

❊ वर्ष : ६० ❊ अंक १० ❊ अक्तूबर २०२३ ❊ १० रुपये ❊ वार्षिक : १०० रुपये ❊ आजीवन : १००० रुपये

म. गांधी ग्लोबल व्हिलेज, सोलापुर में संपन्न कार्यक्रमविशेष- आंतरभारती (हिंदी-मासिक) का स्व. सदाविजय आर्य स्मृति विशेषांक विमोचन तथा आंतरभारती, सोलापुर शाखा की कार्यकारिणी-चयन संबंधी चित्र

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

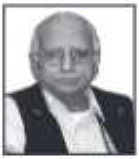

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष/ पूर्व संपादक
स्व. सदाविजय आर्य

प्रेरक, संवर्द्धक संपादक
स्व. यदुनाथ थत्ते

■ कार्यकारी संपादक
प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर – ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

■ प्रधान संपादक
डॉ. सी. जय शंकर बाबु
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी–६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

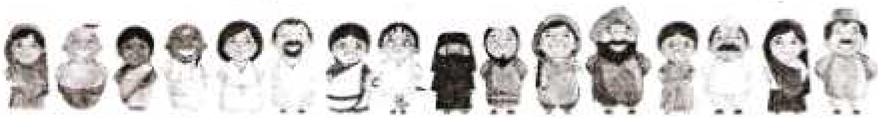

आंतर भारती साने गुरूजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

विश्वस्त – कोषाध्यक्ष
डॉ. उमाकांत चनशेट्टी
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर–४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

प्रबंध कार्यालय
आन्तर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक
ज्योतिराव लढके
मार्गदर्शक
■ डॉ. इरेश स्वामी ■ अमर हबीब ■ पांडुरंग नाडकर्णी ■
सहयोगी – मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक पत्रिका) प्रकाशक कार्याध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की ।

आंतर भारती - अक्तूबर-२०२३

इस अंक में

१) संपादकीय : पारदर्शी जीवन-व्यवहार के पक्षधर के पथ पर....	-	३
२) डॉ. एस.एन. सुब्बाराव भाईजी	-	५
३) वेमना का तत्वज्ञान....	-	६
४) बसव वचन...	-	७
५) तिरुवल्लुवर वाणी...	-	८
६) पुरुषार्थ से ही मिलेगा स्वराज..	-	९
७) गाँधी आज भी प्रासंगिक है	-	१६
८) जन मन तक गांधी को पहुँचाए !		२४

समाचार

आंतर भारती स्नेह मेला २३ अमरावती में

आंतर भारती नियोजन समिति की बैठक में यह तय हुआ कि
२५ दिसंबर २०२३ को अमरावती में इस वर्ष का आंतर भारती स्नेह मेला संपन्न होगा ।
भारतीय महाविद्यालय समागृह, राजापेठ, अमरावती में यह कार्यक्रम होगा ।

वसमत में आंतर भारती स्नेह संवर्धन पुरस्कार कार्यक्रम

आंतर भारती, वसमत की ओर से घोषित स्नेह संवर्धन पुरस्कार इस वर्ष वसमत के श्री अशोक महाराज उपाध्याय को महात्मा गांधी विद्यालय में एक विशेष कार्यक्रम में दिया गया । प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ. बालाजी कोंपलवार एवं पूर्व विधायक पंडितराव देशमुख उपस्थित थे । इस अवसर पर आंतर भारती राष्ट्रीय महिला कार्याध्यक्ष संगीता देशमुख ,वसमत आंतर भारती के अध्यक्ष सुभाष लालपोतू रामचंद्र बागल, संजय जितूरकर, शिवाजीराव सूर्यवंशी,विशाल शिरसूलवार, अपर्णा तनपुरे, रीना माचेवार, अनुसया तोरेवार, मधुकर सोकळवार, रामचंद्र देशमुख, संजय माचेवार ने विशेष योगदान दिया।सौ. सूत्रसंचालन मंगला खानापुरे ने तथा धन्यवाद ज्ञापन अनंतरसा साधू ने किया । इस कार्यक्रम में आंतर भारती व संवाद समूह के सदस्य, गांधी विद्यालय के शिक्षक तथा परिसरीय नागरिक उपस्थित थे ।

(फोटो कवर पृष्ठ ४ पर)

संपादकीय

पारदर्शी जीवन-व्यवहार के पक्षधर के पथ पर चलने की कोशिश करें हम...

– –डॉ. सी. जय शंकर बाबु

अक्सर यह सवाल उठता है कि सड़कों, गलियारों, संस्थाओं, योजनाओं आदि के नामों तक, चौराहों में मूर्तियों तक, सिक्कों, करेन्सी नोटों, डाक टिकटों, शुभंकरों (प्रतीक चिह्नों यानी लोगो) में चित्रों तक ही हमने गांधी जी को सीमित रख दिया है ? गांधीजी की १५० वीं जयंति के उपलक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता पर इधर–उधर चर्चाएँ तो होती रहीं, मगर वर्तमान सामाजिक व्यवहारों में हम उनकी नीतियों, मूल्यों को उतारने में कई दृष्टियों से असफल रहे हैं या पिछड़ रहे हैं । गांधीजी के नाम से दुनिया यह मानती है कि भारत में गांधीजी के मूल्य सर्वत्र प्रतिष्ठित हैं । मगर कई मायनों में इसे साकार करने के लिए हमें कई कदम उठाने होंगे । एक सवाल से ही हम अपनी बात शुरू करें, वर्तमान वैज्ञानिक, मशीनी, प्रौद्योगिकीय प्रगति के आलोक में क्या गांधीजी के मूल्य प्रासंगिक हैं? इसका उत्तर हमें मिलेगा, निश्चय ही ।

आज देश–दुनिया के समक्ष उपस्थित समस्याओं के लिए कई कारगर समाधान गांधीजी की नीतियों में हैं । शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि कई दृष्टियों से गांधीजी का दर्शन प्रासंगिक है । गांधीजी के चिंतन, जीवन और व्यवहार से आज की कई सारी विडंबनात्मक परिस्थितियों के लिए हम समाधान खोज पाएंगे । गांधीजी के एकादश व्रत और रचनात्मक कार्यों को वर्तमान दौर के लिए भी कई दृष्टियों से सही मायने में मोड़कर कई समस्याओं के लिए समाधान पा सकते हैं । केवल गांधीजी जयंती के अवसर पर उन्हें याद करते हुए उनकी नीतियों की प्रासंगिकता पर बात करने या एकाध कार्यों या कार्यक्रमों के संयोजन से ऐसी समस्याओं का समाधान करना संभव नहीं है । सत्य, स्वच्छता, स्वस्थता, स्वावलंबन, स्वदेशी, सहकार, समता, सहजीवन, स्पर्शभावना, सर्वधर्म समभाव, सांस्कृतिक विविधता की रक्षा, सहयोग, सर्वोदय, सार्वजनिक हित आदि कई ऐसे मूल्य हैं जिनकी सदा प्रासंगिकता है । ऐसे मूल्यों के लिए गांधीजी की याद यदा–कदा करने की जगह उनके मूल्यों को अपनाने की बड़ी आवश्यकता है ।

शिक्षा के प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों में मूल्यबद्धता के संस्कार डालने के पक्षधर हैं गांधीजी । गांधीजी की बुनियादी शिक्षा उक्त प्रस्तावित कई मूल्यों की दृष्टि से प्रासंगिक होने के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता, जीवन की कुशलता और मूल्यबद्धता की दृष्टि से भी अत्यंत ही

प्रासंगिक है । कहीं भी, किसी भी स्तर पर भी हम ईमानदारी से गांधीजी की बुनियादी शिक्षा को कार्यान्वित करने प्रति कर्मठता नहीं दिखा रहे हैं । कई पदों, कई प्रतिष्ठाओं, उपलब्धियों के लक्ष्य तो हर किसी विद्यार्थी के मामले में होते हैं, हर कहीं ऐसी कई सारी हमारी अपेक्षाएँ होती हैं, मगर गांधीजी द्वारा परिकल्पित बेहतरीन मानव के विकास के लक्ष्य तो कई कारणों से बाधित हो रहे हैं । गांधीजी के दर्शन को हम अपने चिंतन और व्यवहार में अपनाएँ, यह आवश्यक है ।

पारदर्शी जीवन–व्यवहार के पक्षधर थे बापूजी । उनके कठिन पथ पर चलने की कोशिश करें हम ईमानदारी से, इसीमें गांधी जयंति के स्मरण की प्रासंगिकता है ।

आंतर भारती कई मायनों में गांधीजी के मूल्यों, विचारों, व्यवहार दर्शन को अपना रही है और व्यहार में उतार रही है। गांधीजी के मूल्यों के प्रचार–प्रसार के अलावा आंतर भारती के बाल संस्कार शिविरों में गांधीजी के आदर्शों को अपनाने की व्यावहारिक प्रेरणा बाल जगत की मिल जाती है । सीमित साधनों के बावजूद गांधीजी के चिंतन को अमर बनाने की कोशिश में आंतर भारती कार्यकर्ता तत्पर हैं। साने गुरुजी कई मामलों में गांधीवादी रहे हैं, कुछ परिस्थितियों में उन्होंने अपने मन की बात को सुनकर उग्र कार्यकर्ता का व्यवहार करते हुए शांतिमय सत्याग्रह मार्ग को अपनाकर ही लोकहितार्थ कई लक्ष्यों को हासिल किया था । गांधीवादी मूल्यों में साने गुरुजी की संकल्पबद्धता के प्रति आंतर भारती सदा प्रतिबद्ध है । निश्चय ही आंतर भारती के प्रयासों से गांधीजी के मूल्यों को अमर बनाने और प्रतिष्ठित करने के कार्य निरंतर होते रहेंगे ।

आंतर भारती के कार्यों में मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, खादी, मूल्यबद्धता, सर्वधर्म समभाव, स्पर्श भावना, युवा चेतना, बाल संस्कार आदि कई आयामों पर हर पल प्रतिबद्धता देखी जा सकती है । ये प्रयास निश्चय ही गांधीजी की प्रतिष्ठा बढ़ाने में किसी हद तक योगदान देंगे, इसमें दो राय नहीं हैं । गांधीजी के रचनात्मक कार्यों को सदा अपनाते हुए दूसरों को भी प्रेरित करें, इसमें आंतर भारती के प्रत्येक कार्यकर्ता सदा तत्पर और सन्नद्ध हैं ।

मानवता आंदोलन के कर्मठ सारथी प्रा. सदाविजय आर्य जी सदा गांधीजी के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध रहे हैं । उनके प्रेरक व आंतर भारती के संवर्धक यदुनाथ जी भी आजीवन गांधीवादी जीवन जीते रहे हैं । प्रा. सदाविजय आर्य जी की पहली पुण्य तिथि पर प्रकाशित आंतर भारती प्रा. सदाविजय आर्य स्मृति अंक का विमोचन कुलगुरु ईरेश स्वामी ने किया है । आंतर भारती के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के प्रयासों से अंक के प्रकाशन तथा विमोचन कार्यक्रम सुसंपन्न हुआ है, इन प्रयासों में योगदान देनेवाले सभी आत्मीयजनों का हार्दिक अभिनंदन । आंतर भारती वार्षिक चिंतन

डॉ. एस.एन. सुब्बाराव भाई जी

डॉ. एस एन सुब्बाराव का जन्म ७ फरवरी १९२९, को बैंगलुरु में हुआ था। स्कूल शिक्षा के दौरान से ही डॉ. सुब्बाराव महात्मा गांधीजी के सिद्धांतों से प्रभावित हुए और उनके बताए मार्ग पर चलना शुरू कर दिया। डॉ. सुब्बाराव ने गांधीवादी तरीकों से भारत के स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़कर योगदान दिया। उन्हें सड़कों पर क्विट इंडिया नारा लिखने के आरोप में मात्र १३ वर्ष की आयु में ही ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। उन्होंने वर्ष १९९३ से १९९५ तक सद्भावना रेल यात्रा प्रारंभ कर २१ राज्यों की यात्रा की और राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सदभाव का संदेश प्रसारित किया। उन्होंने मॉस्को, अफ्रीका, अमेरिका, जर्मनी और कनाडा सहित अन्य देशों तथा संयुक्त राष्ट्र में शांति और सद्भावना से जुड़े अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. सुब्बाराव ने अपना सम्पूर्ण जीवन गांधीवादी विचारों और आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने में समर्पित कर दिया। डॉ. सुब्बाराव गांधी पीस फाउण्डेशन के आजीवन सदस्य रहे। उन्होंने मॉस्को अफ्रीका, अमेरिका जर्मनी और कनाडा सहित अन्य देशों तथा संयुक्त राष्ट्र में शांति और सद्भावना से जुड़े अंतरराष्ट्रीय और आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने में समर्पित कर दिया। चम्बल घाटी में बागी आत्मसमर्पण और उनके पुनर्वास के लिए काम किया और कालांतर में राष्ट्रीय युवा योजना और महात्मा गांधी सेवा आश्रम संस्था का निर्माण कर लाखों नवजवानों को समाज कार्य के लिए प्रेरित किया। २७ अक्तूबर २०२१ को भाई जी का देहावसान हो गया। ९२ वर्ष की उम्र तक वे देश सेवा के लिए कार्य करते रहे। इनका समाधि-स्थल चम्बल घाटी के मुरैना जिले में जौरा में स्थित है जहां पर इनके जीवन से जुड़े कार्यों पर प्रदर्शनी भी लगायी गयी है, जहाँ निरंतर स्कूल, कालेज और विश्विद्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े नवजवान आकर प्रेरणा लेते हैं। सुब्बाराव जी को पूरा देश प्यार से भाई जी के नाम से संबोधित करता है।

संपादकीय....

शिविर (२५-२७ नवंबर, २०२३) की पूर्ण सफलता हेतु अग्रिम शुभकामनाओं सहित..

विश्व शाकाहार दिवस (१ अक्तूबर), गांधी जयंति तथा अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस (२ अक्तूबर), विश्व प्राणी कल्याण दिवस (४ अक्तूबर), विश्व शिक्षक दिवस (५ अक्तूबर), वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य दिवस (१० अक्तूबर), विश्व खाद्य दिवस (१३ अक्तूबर), अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस (१७ अक्तूबर), राष्ट्रीय एकता दिवस (३१ अक्तूबर), नवरात्रि, विजयदशमी आदि पर्वों के अवसर पर अग्रिम हार्दिक शुभकामनाओं सहित..

वेमना का तत्व-चिंतन

तेलुगु मूल – योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

जीवि जीवि जंपि जीविकि वेयगा
जीवि वलन नेमि चिक्कियुंडे
जीविहिंसलकुनु चिक्कुना मोक्षंबु
विश्वदाभिराम विनुरवेम ।

जीव जीव को मारकर जीव को डालने से
जीव से क्या मिला
जीव–हिंसा से क्या मोक्ष मिलेगा
विश्वदाभिराम ! सुनरे वेमा !

व्याख्या – जीव को मारकर जीव को परोसने से उस जीव से क्या मिलेगा? क्या जीव–हिंसा से मोक्ष मिलेगा? ये सवाल उठाने वाले संत वेमना का मानना है कि लोग जीव को मारकर उसे खाने की इच्छा से ही, जीव को मारकर भगवान को भोग के रूप में समर्पित कर देते हैं। वैसे जीव को मारने से कोई भी मोक्ष नहीं मिलता है। जीव सर्जक ईश्वर को जीव को मारकर भोग के रूप में समर्पित करना कितनी मूर्खता है, ऐसी मूर्खता मोक्ष प्राप्ति की योग्यता कैसी रखती है, यही वेमना का सवाल है।

महात्मा बसवेश्वर वचन

।। मूळ कन्नड वचन ।।

तुप्पद सविगे अलग नेक्कुव
सोणगनंतायित्तेन बाळुवे
संसारव बिडदु नोडेन्न मनवु
ई नायितनव बिडिसु
कूडल संगय्य निम्म धर्म

हिंदी काव्यानुवाद

घी की लालसा से
शस्त्र की धार को चाटनेवाले
कुत्तेसम हुआ है मेरा जीवन ।
संसार छोडता नहीं मेरा स्वभाव ।।
इससे मुक्ति दे कूडल संगम देव ।।

सारांश

मनुष्य सांसारिक मोह में फंसा है । इसी मोहभाव के कारण दुःखी रहता है । लोभ के कारण वस्तुओं को प्राप्त करने के सदा प्रयत्नरत रहता है । पुराने जमाने में शस्त्रों को जंग न लगे, उसके धार पर घी लगा के रखते थे, उसकी गंध पाकर कुत्ता जैसे चाटने लगता है, लेकिन खुद फलतः जीभ कटने पर भी घी के साथ खून भी स्वादिष्ट लगता है, ऐसे लाचार जीवन से मुक्त कराने की विनती की जा रही है ।

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी
विद्या, १२ ब्रह्मचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल – संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथम खंड – अरत्तुपाल (धर्म खंड)
तुरवऱवियल् (संन्यास–धर्म)
अध्याय २६. पुलाल् मरुत्तल् (मांसाहार त्यागना)
उण्णामै वेण्डुम पुलाअल् पिरिदोन्ऱन्
पुण्णादु उणर्वार्प् पेऱिन् । (कुरल – २५७)

मांसभक्षक
जाने जीव पीड़ा, हो
परिवर्तन ।

भावार्थ – मांस–भक्षक यदि उस जीव की पीड़ा के बारे अपने स्तर पर सही मायने में सोचेगा जिसका शरीर का व्रण ही उसका आहार है तो वह मांसाहार छोड़ सकता है । तिरुवल्लुवर मानते हैं कि मांस के रूप में जिस जीव को मारा जाता है उसके शरीर के कष्ट दायक घाव को समझने से मांसाहारी में ह्रदय परिवर्तन हो सकता है ।

शेयिरिन् तलैप्पिरन्द काट्चियार् उण्णार्
उयिरिन् तलैप्पिरन्द ऊन् । (कुरल – २५८)

ज्ञानी न खाता
मांस, मृत जीव का
देह ही मांस ।

भावार्थ – विवेकशील व्यक्ति कभी मांस–भक्षण नहीं करेंगे, क्यों कि वे जानते हैं कि किसी जीव का मृत शरीर उसका भोजन बन रहा है । तिरुवल्लुवर का कहना है कि मांस–भक्षक यदि विवेकशील है तो निश्चय ही वह अपना भ्रम छोड़ देगा, क्योंकि वह यह समझ पाएगा कि मांसाहार किसी जीव का मरा हुआ शरीर ही है ।

मोहनदास करमचन्द गाँधी

पुरुषार्थ से ही मिलेगा स्वराज

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में दिया गया भाषण

दोस्तो, यहाँ आते हुए मुझे रास्ते में बहुत देर लग गयी। मैं इसके लिए क्षमा याचना करता हूँ। आप ख़ुशी से माफ भी कर देंगे क्योंकि इस देरी के लिए न मैं जिम्मेदार हूँ, न कोई और आदमी (हँसी); सच कहूँ तो मैं पिंजो का जानवर हूँ और मेरी देख-रेख करनेवाले लोग अत्यधिक ममता के कारण जीवन के एक महत्त्वपूर्ण पहलू अर्थात् शुद्ध संयोग की बात को भूल जाते हैं। इस बारे भी हम लोग, मैं, मेरे निरीक्षक और मुझे उठाकर चलनेवालों को एक के बाद एक जिन दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा, उसकी पूर्व कल्पना करके तो कोई इन्तजाम नहीं किया गया था; इसलिए इतनी देरी हो गयी।

दोस्तो, अभी-अभी जो महिला भाषण देकर बैठी हैं उनकी अद्भुत वाक्शक्ति के प्रभाव में आकर आप लोग कृपया इस बात पर विश्वास न कर लें कि जो विश्वविद्यालय अभी तक पूरा बना और उठा भी नहीं है वह कोई परिपूर्ण संस्था है और अभी जो विद्यार्थी यहाँ आए तक नहीं हैं, वे शिक्षा सम्पादन करके यहाँ से एक महान साम्राज्य के नागरिक होकर निकल चुके हैं। मन पर ऐसी कोई छाप लेकर आप लोग यहाँ से न जाएँ और जिनके सामने आज मैं बोल रहा हूँ वे विद्यार्थीगण तो एक क्षण के लिए भी इस बात को मन में जगह न दें कि जिस आध्यात्मिकता के लिए इस देश की ख्याति है और जिसमें उसका कोई सानी नहीं है, उस आध्यात्मिकता का सन्देश बातें बधार कर दिया जा सकता है। अगर आपका ऐसा कुछ ख्याल हो तो मेहरबानी करके मेरी इस बात पर भरोसा कीजिए कि आपका वह खयाल गलत है। मुझे आशा है कि किसी-न-किसी दिन भारत संसार को यह सन्देश देगा; किन्तु केवल वचनों के द्वारा वह सन्देश कभी नहीं दिया जा सकेगा। मैं भाषणों और तकरीरों से ऊब गया। अलबत्ता पिछले दो दिनों में यहाँ जो भाषण दिये गये उन्हें मैं इस तरह की तकरीरों से अलग मानता हूँ:, क्योंकि वे जरूरी थे। फिर भी मैं यह कहने की धृष्टता कर रहा हूँ कि हम भाषण देने की कला के लगभग शिखर पर जा पहुँचे हैं और अब आयोजनों को देख लेना और भाषणों को सुन लेना ही पर्याय नहीं माना जाना चाहिए: अब हमारे मनों में स्फुरण होना चाहिए और हाथ-पाँव हिलने चाहिए। पिछले दो दिनों में हमें बताया गया कि अगर भारतीय जीवन की सादगी कायम रखनी है। तो हमें अपने हाथ-पाँव और मन की गति में सामंजस्य लाना आवश्यक है। वैसे यह भूमिका हुई। मैं कहना यह चाहता हूँ कि मुझे आज इस पवित्र नगर में, इस महान

विद्यापीठ के प्रांगण में, अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है। पिछले दो दिनों में यहाँ जो भाषण दिये गये यदि उनमें लोगों की परीक्षा ली जाए और मैं गत दिसम्बर में राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में मौजूद था। वहाँ बहुत अधिक तादाद में लोग इकट्ठा हुए थे। आपको ताज्जुब होगा कि मुम्बई के वे तमाम श्रोता केवल उन भाषणों से प्रभावित हुए जो हिन्दी में दिए गये थे। ध्यान दीजिए वह मुम्बई की बात है बनारस की नहीं, जहाँ सभी लोग हिन्दी बोलते हैं। मुम्बई प्रान्त की अपनी भाषा और हिन्दी में उतना फर्क नहीं है जैसा अँग्रेज़ी और भारतीय भाषाओं में है। इसलिए वहाँ के श्रोता हिन्दी में बोलने वाले की बात ज्यादा आत्मीय भाव से समझ सके। मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाएगा। हमारी भाषा पर हमारा ही प्रतिबन्ध है और इसलिए यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी – भाषाओं में उत्तम विचार अभिव्यक्त किए ही नहीं जा सकते तब तो हमारा संसार से उठ जाना अच्छा है। क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है? (नहीं, नहीं की आवाजे) फिर राष्ट्र के पाँवों में यह बेड़ी किसलिए? जरा सोचकर देखिए कि अंग्रेज़ी भाषा में, अंग्रेज़ बच्चों के साथ होड़ कराने में हमारे बच्चों पर कितना वजन पड़ता है। पूना के कुछ प्रोफेसरों से मेरी बात हुई। उन्होंने बताया कि चूंकि हर भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेज़ी की मार्फत ज्ञान–सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपनी जिन्दगी के देश – कांपती बरसों में से कम–से–कम छह वर्ष अधिक जाया करने पड़ते हैं। हमारे स्कूलों और कॉलेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की संख्या में इस छह का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र के कितने हजार वर्ष बरबाद हो चुके हैं। हम पर आरोप लगाया जाता है कि हममें पहल करने का माद्दा नहीं है। हो भी कैसे सकता है? यदि हमें एक विदेशी भाषा पर अधिकार पाने के लिए जीवन के अमूल्य वर्ष लगा देने पड़ें तो फिर और हो क्या सकता है? और तो और हम इसमें भी सफल नहीं हो पाते। श्री हिंगवॉटम ने श्रोताओं को जितना प्रभावित किया, क्या कल और आज बोलनेवालों में एक भी अन्य वक्ता उतना प्रभावित कर सका? यह उन बोलनेवालों का कसूर नहीं था। सामग्री तो उनके भाषणों में भरपूर थी, लेकिन उनके भाषणों ने हमारा मन नहीं पकड़ा। कहा जाता है कि आखिरकार भारत के अंग्रेजीदा ही देश का नेतृत्व कर रहे हैं और वे ही राष्ट्र के लिए सब कुछ कर रहे हैं। अगर इससे विपरीत बात होती तो वह और भयानक होती, क्योंकि हमें शिक्षा के नाम पर केवल अंग्रेजी शिक्षा ही तो मिलती है। शिक्षा का कुछ न कुछ परिणाम तो निकलता ही है। किन्तु मान लीजिए हमने पिछले पचास वर्षों

में अपनी–अपनी भाषाओं के जरिए शिक्षा पाई होती, तो हम आज किसी स्थिति में होते ? तो आज भारत स्वतन्त्र होता, तब हमारे पढ़े–लिखे लोग अपने ही देश में विदेशियों की तरह अजनबी न होते बल्कि देश के हृदय को छूनेवाली वाणी बोलते; वे ग़रीब से गरीब लोगों के बीच काम करने और पचास वर्षों को उनकी उपलब्धि पूरे देश की विरासत होती। आज तो हमारी अर्धांगिनियाँ भी हमारे श्रेष्ठ विचारों की भागीदार नहीं हैं। प्रो. बसु और प्रो. राय तथा उनके शानदार आविष्कारों को ही लीजिए। क्या यह लज्जा की बात नहीं है कि जनता का उनसे कुछ लेना–देना नहीं है। अब हम दूसरी बात लें !

कांग्रेस ने स्वराज के लिए एक प्रस्ताव पास किया है। यों तो मुझे विश्वास है कि अखिल भारतीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग अपना कर्तव्य पूरा करेंगी और कुछ–न–कुछ ठोस सुझावों के साथ सामने आएँगी; किन्तु जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं स्पष्ट रूप से यह बात स्वीकार करना चाहता हूँ कि इस बात में उतनी दिलचस्पी नहीं है कि वे क्या–कुछ कर पाती हैं, जितनी इस बात में है कि विद्यार्थी–जगत क्या करता है या जनता क्या करती है। कोई भी कागजी कार्रवाई हमें नहीं दे सकती। धुआँधार भाषण हमें स्वराज के योग्य नहीं बना सकते। वह तो हमारा अपना आचरण हैं। जो हमें उसके योग्य बनाएगा। सवाल यह है कि हम अपने पर किस प्रकार राज्य करना चाहते हैं? मैं आज भाषण नहीं देना चाहता, श्रव्य रूप में सोचना चाहता हूँ। यदि आज आपको ऐसा लगे कि मैं असंगत होकर बोल रहा हूँ, तो कृपया मानिए कि कोई आदमी जोर–जोर से बोलता हुआ सोच रहा है और वही आप सुन पा रहे हैं। और यदि आपको ऐसा जान पड़े कि मैं शिष्टाचार की सीमा का उल्लंघन कर रहा हूँ तो कृपया उस स्वच्छन्दता के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

कल शाम मैं विश्वनाथ के दर्शन के लिए गया था ! उन गलियों में चलते हुए मेरे मन में ख्याल आया कि यदि कोई अजनबी एकाएक ऊपर से इस मन्दिर पर उतर पड़े और यदि उसे हमें हिन्दुओं के बारे में विचार करना तो क्या हमारे बारे में कोई छोटी राय बना लेना उसके लिए स्वाभाविक न होगा ? क्या यह एक महान मन्दिर हमारे सामने अपने आचरण की ओर उँगली नहीं उठाता? मैं यह बात एक हिन्दू की तरह बड़े दर्द के साथ कह रहा हूँ। क्या यह कोई ठीक बात है कि हमारे पवित्र मन्दिर के आसपास की गलियाँ इतनी गन्दी हों? उसके आसपास जो घर बने हुए हैं वे बे–सिलसिले और चाहे जैसे हों। गलियाँ टेढ़ी–मेढ़ी और संकरी हों। अगर हमारे मन्दिर भी सादगी और सफाई के नमूने न हों तो हमारा स्वराज कैसा होगा? चाहे ख़ुशी से, चाहे लाचारी से अँग्रेजों का बोरिया–बिस्तर बँधते ही क्या हमारे मन्दिर पवित्रता, स्वच्छता और शान्ति के धाम बन जाएँगे?

मैं कांग्रेस के अध्यक्ष से इस बात में सहमत हूँ कि स्वराज की बात सोच के पहले

हमें बड़ी मशक्कत करनी पड़ेगी। हमारे यहाँ हर शहर के दो हिस्से होते हैं; बस्ती खास और छावनी। बस्ती को अक्सर एक बदबूदार, गन्दी कोठरी समझिए। यह ठीक है कि हम शहरों की ज़िन्दगी के आदी नहीं हैं। लेकिन जब शहरी जिन्दगी की हमें ज़रूरत ही है तो उसे हम अपने लापरवाह ग्राम्य-जीवन का प्रतिबिंच तो नहीं बना सकते। मुम्बई की जिन गलियों में, भारतीय रहते हैं, वहाँ राहगीर को यह धुकधुकी लगी ही रहती है कि कहीं कोई ऊपर की मंजिल से उन पर पीक न छोड़ दें। यह बड़ी विचारणीय परिस्थिति है। मैं काफ़ी रेल यात्रा करता हूँ। तीसरे दर्जे के यात्री की तकलीफ़ों पर ध्यान जाता है। किन्तु इन सभी तकलीफ़ों की जिम्मेदारी रेलवे के अधिकारियों के ऊपर नहीं मढ़ी जा सकती। यह जानते हुए भी कि डिब्बे का फर्श अक्सर सोने के काम में बरता जाता है, हम उस पर जहाँ-तहाँ थूकते रहते हैं। हम जरा भी नहीं सोचते कि हमें वहाँ क्या फेंकना चाहिए, क्या नहीं; और नतीजा यह होता है कि सारा डिब्बा गन्दगी का अवर्णनीय नमूना बन जाता है। जिन्हें कुछ ऊंचे दर्जे का माना जाता है, वे अपने से कम भाग्यशाली अपने भाइयों के साथ डाँट-डपट का व्यवहार करते हैं। विद्यार्थी वर्ग को भी मैंने ऐसा करते पाया है। वे भी ग़रीब सहयात्रियों के साथ कुछ अच्छा व्यवहार नहीं करते। वे अँग्रेज़ी बोल सकते हैं और नारफॉक जाकिटें पहने होते हैं। . और इसलिए वे अधिकार जताकर डिब्बे में घुस जाते हैं और बैठने की जगह ले लेते हैं। मैंने हर अँधेरे कोने को मशाल जलाकर देखा है; और चूँकि आपने मुझे बातचीत करने की यह सुविधा दी है, मैं अपना मन आपके सामने खोल रहा हूँ। स्वराज की दिशा में बढ़ने के लिए हमें बिना शक ये सारी बातें सुधारनी चाहिए। अब मैं आपको दूसरी जगह ले चलता हूँ। जिन महाराजा महोदय ने कल की हमारी बैठक की अध्यक्षता की थी, उन्होंने भारत की ग़रीबी की चर्चा की। दूसरे वक्ताओं ने भी इस बात पर बड़ा जोर दिया। किन्तु जिस शामियाने में वायसरॉय द्वारा शिलान्यास - समारोह हो रहा था, वहाँ हमने क्या देखा एक ऐसा शानदार प्रदर्शन, जड़ाऊ गहनों की ऐसी प्रदर्शनी, जिसे देखकर पेरिस से आनेवाले किसी जौहरी की आँखें भी चौंधिया जातीं। जब मैं गहनों से लदे हुए उन अमीर-उमरावों और भारत के लाखों गरीब आदमियों से मिलता हूँ तो मुझे लगता है, मैं इन अमीरों से कहूँ, जब तक आप अपने ये जेवरात नहीं उतार देते और उन्हें गरीबों की धरोहर मानकर नहीं चलते, तब तक भारत का कल्याण नहीं होगा। (हर्षध्वनि और तालियाँ) मुझे यकीन है कि सम्राट अथवा लॉर्ड हार्डिंज़ सम्राट के प्रति वास्तविक राजभक्ति दिखाने के लिए किसी का गहनों के सन्दूक उलटकर सिर से पाँव तक सजकर आना जरूरी नहीं समझते। अगर आप चाहें तो मैं जान की बाजी लगाकर महाराज जॉर्ज पंचम का सन्देशा आपको लाकर दे दूँ कि वे नहीं चाहते।

भाइयों, जब कभी मैं सुनता हूँ कि कहीं, फिर वह ब्रिटिश भारत में हो, चाहे हमारे बड़े–बड़े राजाओं और नवाबों द्वारा शासित रजवाड़ों में, कोई बड़ा भवन उठाया जा रहा है तो मेरा मन दुखी हो जाता है और मैं सोचने लगता हूँ, यह पैसा तो किसानों के पास से इकट्ठा किया गया पैसा है। हमारे ७५ प्रतिशत से भी अधिक लोग किसान हैं; कल श्री हिगिनबॉटम ने अपनी प्रवाहमयी वाणी में कहा, ये ही वे लोग हैं जो एक के दो दो करते हैं यदि हम इनके परिश्रम की सारी कमाई दूसरों को उठाकर ले जाने दें तो कैसे कहा जा सकता है कि स्वराज की कोई भी भावना हमारे मन में है। हमें आजादी किसान के बिना नहीं मिल सकती। आज़ादी वकील और डॉक्टर या सम्पन्न जमींदारों के वश की बात नहीं है।

अब अन्त में उस बात का थोड़ा–सा विवेचन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिसने आज दो–तीन दिनों से हमारे मनों को उद्विग्न कर रखा है। श्रीमान वाइसरॉय के यहाँ के रास्तों से निकलने के समय हम सब लोग बड़ी चिंता में थे। स्थान–स्थान पर खुफिया पुलिस के लोग नियत थे। हम दंग रह गये। हमारे मन में बार–बार यह प्रश्न उठता था कि हमें लोगों के प्रति इतने अविश्वास का क्या कारण है? इस प्रकार मरणान्तक–दुख भोगते हुए जीने की अपेक्षा क्या लॉर्ड हार्डिंज के लिए सचमुच ही मर जाना अधिक श्रेयस्कर नहीं है ! परन्तु एक बलशाली सम्राट के प्रतिनिधि इस प्रकार मर भी नहीं सकते। मृतक की भाँति जीना ही वे शायद जरूरी समझते होंगे। पर दूसरा प्रश्न यह है कि खुफिया पुलिस का जुआ हमारे सिर पर लादने का क्या कारण है ? हम क्रुद्ध होते हों, बड़बड़ाते हों, हाथ–पैर पटकते हों, या और जो चाहे सो करते हों, पर फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत में अराजक दल की उत्पत्ति का कारण उतावलेपन का नशा है। मैं खुद भी अराजक ही हूँ, पर दूसरे वर्ग का । हमारे यहाँ अराजकों का एक वर्ग है, जिससे यदि मुझे मिलने का अवसर मिले तो मैं उनसे स्पष्ट कह दूंगा कि भाइयो । यदि भारत को अपने विजेताओं पर विजय प्राप्त करनी हो तो आपकी अराजकता के लिए यहाँ जगह नहीं है । यह भीरुता का लक्षण है। यदि आपका ईश्वर पर विश्वास हो और यदि आप उसका भय मानते हों तो फिर आपको किसी से डरने का कोई कारण नहीं है; फिर चाहे वे राजा–महाराजा हों, वाइसरॉय हों, खुफिया पुलिस हों अथवा स्वयं सम्राट हों अराजकों के स्वदेश– प्रेम का मैं बड़ा आदर करता हूँ। वे जो स्वदेश के लिए आनन्दपूर्वक मरने के लिए प्रस्तुत रहते हैं, उनकी मैं इज्ज़त करता हूँ। पर मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या मृत्यु दंड प्राप्त होता है उसे किसी भी प्रकार गौरवपूर्ण माना जा सकता है? मैं कहता हूँ 'नहीं'। कोई धर्मग्रन्थ ऐसे उपाय का अवलम्बन करने की अनुमति नहीं देता।

यदि मुझे इस बात का विश्वास हो जाए कि अंग्रेजों के रहते हुए इस देश का

कदापि उद्धार न होगा– उन्हें यहाँ से निकाल ही देना चाहिए तो उनसे अपना बोरिया–बिस्तर समेटकर यहाँ से चलते होने की प्रार्थना करने में मैं कभी आगा–पीछा न करूँगा और मुझे विश्वास है कि अपनी दृढ़ धारणा के समर्थन में मरने को भी तैयार रहूँगा, मेरा मरण ही मेरी सम्पति में प्रतिष्ठा का मरण है। बम फेंकने वाला गुप्त रूप से षड्यन्त्र करता हैं। वह बाहर निकलने से डरता रहता है और पकड़े जाने पर अयोग्य और अतिरिक्त उत्साह का प्रायश्चित भोगता है। ये लोग कहते हैं कि यदि हम लोग ऐसी कार्रवाइयों न करते, यदि हमारे कुछ साथी बहुतों को बम का निशाना न बनाते तो बंग भंग के सम्बन्ध में...। (इस स्थान पर श्रीमती बेसेंट ने गाँधी जी के भाषण शीघ्र समाप्त करने के लिए कहा।) मि. लॉयस की अध्यक्षता में बंगाल में भी मैंने यही बात कही थी। मेरा ख्याल है कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह बिलकुल ठीक है। मुझे अपना भाषण समाप्त करने को कहा जाएगा तो मैं बन्द कर दूंगा। (अध्यक्ष को सम्बोधित कर) महाराज, मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यदि आपकी समझ में मेरी इन बातों से देश और साम्राज्य को हानि पहुँच रही है तो मुझे अवश्य चुप हो जाना चाहिए। (कहिए, कहिए का शोर अध्यक्ष ने गांधी जी से १ अपना मतलब साफ तौर पर बतलाने को कहा) मैं अपना मतलब स्पष्ट करता हूँ। मैं सिर्फ़ (फिर गड़बड़) मित्रो, इस गड़बड़ से आप रुष्ट न हों। श्रीमती बेसेंट को मेरा चुप हो जाना उचित जान न पड़ता है, इसका कारण यह है कि भारत पर उनका बहुत अधिक प्रेम है और वे समझती हैं कि युवकों के सामने इस प्रकार की स्पष्ट बातें कहकर मैं अनुचित काम कर रहा हूँ। पर यदि ऐसा हो तो भी मेरा कहना है कि मुझे भारत को उस अविश्वास से मुक्त करना है, जो राजा और प्रजा, सभी के मन में उत्पन्न हो गया है। यदि अपने न साध्य को प्राप्त करना हो तो परस्पर की प्रीति तथा विश्वास पर क स्थापित साम्राज्य से ही हमारा काम चलेगा और अपने–अपने घरों में बैठे–बैठे दायित्वहीन ढंग से यही बातें कहने की अपेक्षा क्या इस विद्यालय के प्रांगण में खड़े होकर उन्हें खुले तौर पर कहना अधिक अच्छा नहीं है? मेरा तो ख्याल हैं, इन बातों को पूरी स्पष्टता से कहना ही अधिक अच्छी बात हैं। पहले भी मैंने ऐसा ही किया है और उसका परिणाम बहुत ही उत्तर हुआ है। मैं यह भी जानता हूँ कि आज ऐसी कोई बात नहीं है जिसकी विद्यार्थियों में चर्चा न होती हो या जिसे वे न जानते हों। इसीलिए मैंने यह आत्मनिरीक्षण आरम्भ किया है। अपने देश का नाम मुझे बड़ा ही प्यारा है। इसीसे मैंने आप लोगों के साथ विचार–विनिमय की इतनी चेष्टा की है और आप लोगों से मेरी नम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि अराजकता को भारत में बिलकुल स्थान न मिलने दीजिए। राजकर्ताओं से आपको जो कुछ कहना हो उसे खुलकर साफ़ शब्दों से कह दीजिए, और यदि आपका कथन उन्हें बुरा लगे तो उसके

परिणास्वरूप जो कष्ट मिलें उन्हें भोगने के लिए तैयार रहिए आप उन्हें गालियाँ न दीजिए। जिस सिविल सर्विस पर निन्दा की बेहद बौछार की जाती है, एक बार उसके एक अधिकारी से मुझे वार्तालाप करने का अवसर मिला था। इन लोगों से मेरा कुछ बहुत हेलमेल नहीं है, तथापि उसकी बातचीत का ढंग प्रशंसनीय था । उन्होंने पूछा– क्या आपका भी ऐसा ही ख्याल है कि हम सभी सिविल सर्विस वाले बुरे होते हैं और जिन लोगों पर शासन करने के लिए हम यहाँ आते हैं, उन पर हम केवल अत्याचार ही करना चाहते हैं? मैंने कहा– नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। इस पर उन्होंने कहा कि तो फिर जब कभी आपको मौका मिले आप हम अभाग सिविल सर्वेंटों के पक्ष में लोगों के सामने दो शब्द कहने की कृपा करें। वे दो शब्द मैं यहाँ कहने वाला हूँ। इंडियन सिविल सर्विस के बहुत से लोग निःसन्देह उद्धत, अत्याचारप्रिय और अविवेकी होते हैं। इसी तरह के और कितने ही विशेषण उन्हें दिये जा सकते हैं। यह सब कुछ मुझे स्वीकार है। यही नहीं, मैं यह भी मानता हूँ कि कुछ वर्षों तक हमारे देश में रहकर वे और भी ओछी मनोवृत्ति के बन जाते हैं। पर इससे क्या सूचित होता हैं ? यहाँ आने के पहले यदि वे सभ्य और सत्पुरुष पर यहाँ आकर यदि वे नीति–भ्रष्ट हो गये तो क्या इसको हमारे ही चरित्र का प्रतिविम्ब नहीं करना चाहिए? (नहीं, नहीं) आप लोग खुद ही विचार करें कि एक मनुष्य, जो कल तक भला आदमी था, मेरे साथ रहने पर ख़राब हो जाए तो उसके इस अध:पतन के लिए कौन उत्तरदायी होगा? वह या मैं? भारत में आने पर खुशामद की जो हवा उन्हें चारों ओर से घेर लेती है वही उनके नीतिच्युत होने का कारण हैं। ऐसी हालत में कोई भी व्यक्ति नीतिच्युत हो सकता हैं, कभी–कभी अपने दोष स्वीकार करना भी अच्छा होता है।

यदि किसी दिन हमें स्वराज मिलेगा तो वह अपने ही पुरुषार्थ से मिलेगा। वह दान के रूप में कदापि नहीं मिलने का। ब्रिटिश–. साम्राज्य के इतिहास पर दृष्टिपात कीजिए। ब्रिटिश साम्राज्य, चाहे जितना स्वातन्त्र्य–प्रेमी हो, फिर भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए स्वयं उद्योग न करनेवालों को वह कभी स्वतन्त्रता देने वाला नहीं है। आप चाहें तो बोअर युद्ध से कुछ शिक्षा ले सकते हैं। कुछ ही वर्ष पहली जो बोअर लोग साम्राज्य के शत्रु थे, वही अब उसके मित्र हैं।

(इस समय फिर गड़बड़ शुरू हुई और श्रीमती बेसेंट उठकर चल दीं। उनके साथ और भी कई बड़े–बड़े लोग उठकर चलते बने। और व्याख्यान का अन्त यहाँ हो गया।) !

आंतर भारती, अंबाजोगाई की ओर से कार्यकर्ता पुरस्कार

अंबाजोगाई : आंतर भारती को ओर से २ अक्तूबर के दिन महावीर भगरे को कार्यकर्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इसीदिन सहभोजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुए । (फोटो कवर पृष्ठ ४ पर)

प्रख्यात गाँधीवादी चिन्तक एस.एन. सुब्बाराव से दिनेश पाठक का संवाद

गाँधी आज भी प्रासंगिक है

''महात्मा गाँधी के महाप्राण के लगभग कई दशक बाद गांधी आज भी कुछ ऐसे लोगों के जीवन के माध्यम से अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं जो देश काल और समाज में आये परिवर्तन से विचलित हुए बिना शान्ति दूत के रूप में अपने काम में निरन्तर संलग्न हैं। इन्हीं में से एक हैं गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के जन्मदाता वयोवृद्ध गांधीवादी मन्त और समाज सुधारक डॉक्टर सलेम नानजुन सहीआ सुब्बाराव । डॉ. सुब्बाराव के संसार में न कोई सरहद है, न मजहब, न जात-पात, न ऊँच-नीच. उनके संसार में हैं तो बस एक गौरवान्वित राष्ट्र, शान्तिमय समाज, न्यायपूर्ण व्यवस्था और इसे साकार करने के लिए एक स्वस्थ्य, सुन्दर और न्यायपूर्ण युवा मन। पिछली पांच पौड़ियों से युवाओं के प्रेरक डॉ. सुब्बाराव जी को निकट से जानने वाले प्रेमपूर्वक भाईजी कहते हैं । वे युवा शिविरों के माध्यम से पिछले ७-८ दशकों में लाखों युवाओं का प्रशिक्षित कर चुके हैं।''

स्वप्रेरणा से भारत छोड़ो आन्दोलन के साथ जुड़कर आपने बापू के जीवन दर्शन और चिन्तन को निरंतर व्यावहारिक तौर पर आजमाया है और इसमें सफल भी रहे हैं, किन्तु हाल के दो-एक दशकों में देश, समाज और दुनिया में इतने अधिक परिवर्तन आये हैं कि कभी-कभी आज के दौर में गाँधी की प्रासंगिकता पर भी सवाल उठने लगे हैं, आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

ऐसे प्रश्न सिर्फ भारत में उठते हैं। अभी पिछले महीने अमेरिका जाते समय रास्ते में मुझे एमस्टर्डम में प्लेन बदलना पड़ो, वहाँ से एक सज्ञन मेरे साथ वाली सीट पर आकर बैठे । करीब ६०-७० बरस के होंगे, शायद हॉलैंड के ही थे। मैंने सहज परिचय दिया और फिर उनसे पूछा, डू यू नो गाँधी ? (क्या आप गाँधी को जानते हैं) उन्होंने यस या नो नहीं कहा और तुरन्त जवाव दिया । हू डजंट नो ? (कौन नहीं जानता) मानो जबाव एकदम तैयार था उनके पास । ये हॉलैंड की बात है। अमेरिका में मार्टिन लुथर किंग जैसे नेताओं के कारण गाँधी को काफी जाना समझा जाता है। २-३ साल पहले मैं न्यूयार्क गया जॉन एफ. केनेडी एयरपोर्ट पर उतरकर अपना सामान लेने 'कनवेयर' पर गया तो देखा पीछे दीवाल पर एक ५०-६० फीट चौड़ा बैनर लगा है, गाँधी की तस्वीर के साथ और उसके दाएँ तरफ उतने ही बड़े बैनर पर ८-

१० फीट के अक्षर में लिखा है, व्हाट मेड गाँधी नीचे की लाइन में लिखा है गाँधी यानी गाँधी को किस बात ने बनाया। केनेडी एअरपोर्ट जहाँ से हज़ारों अपनी रोज गुजरते हैं वहाँ यह बैनर लगा है। यानी अमेरिका टूट रहा है, और उत्तर तलाश रहा है। तो ऐसा है कि भारत के लोग गाँधी को स्वीकार करेंगे जब गाँधी अमेरिका होकर आएँगे, यानी अमेरिका के माध्यम से भारतीय मानस में प्रवेश...करेंगे होता है ऐसा गौतम बुद्ध जापान होकर आये तो लोगों ने उन्हें ज़्यादा समझा, बड़ा स्वागत किया । विवेकानन्द शिकागो से लौटकर आये तब उनकी पूछ परख बढ़ी।

लेकिन मेरे विचार से लोगों के सोच में भी बड़ा परिवर्तन आया है?

हाँ परिवर्तन तो आया है, यह अन्तरराष्ट्रीय 'फिनोमिना है' क्योंकि साइंस और टेक्नोलॉजी बहुत कुछ बदल रही है। लेकिन जो विचारपूर्ण लोग हैं वे इसे समझते हैं। अर्नाल्ड टयानबी को जब नोबल पीस प्राइज मिला और उनसे पूछा गया, कि सारी दुनिया भ्रमण करने के बाद आपका अनुभव क्या है? उसका सार क्या है तो उन्होंने कहा–दुनिया विविधता से भरी पड़ी है। भाषा देखो तो हजारों, खाना देखो तो इतनी विविधता, वेशभूषा देखो तो तमाम पहनावे यानी दुनिया विविधता से भरी हुई है। लेकिन इन सारी विविधताओं के बीच केवल एक समानता जो मैं देखता हूँ, वह है 'रेस्टलैसनेस' यानी सारी दुनिया के लोग बेचैन है। जब उनसे पूछा गया कि इस बेचैनी का निवारण क्या है। तो वो बोलते हैं एक विश्व परिवार यानि पूरी दुनिया एक होना चाहिए लेकिन नीचे छोटे–छोटे समुदाय होना चाहिए। अब छोटे–छोटे समुदाय में बाँटने के लिए देशों को तोड़ा तो नहीं सकता तो फिर इसका व्यवहारिक हल क्या है, उनके अनुसार इसका हल है कि किसी भी बच्चे को स्कूल जाने के लिए हाइवे क्रॉस नहीं करना पड़े, किसी भी महिला को घर की आप जरूरत के सामान के लिए लम्बी दूरी तय नहीं करना पड़े। आज की दुनिया के वर्तमान स्वरूप पर दो महान लोगों का प्रभाव रहा है। एक कार्ल मार्क्स और दूसरे थोड़े वर्षों के बाद महात्मा गाँधी दोनों के विचारों में बड़ा भारी अन्तर्विरोध भी रहा। एक कहते है मारो, दूसरा कहता है मारना है तो मुझे मारो, एक कहते हैं बड़ी बड़ी मशीन लगाओ, दूसरे कहते हैं, चरखा से काम चलाओ। लेकिन एक विचार में दोनों की सहमति है। कार्ल मार्क्स के विचार से समाज बने तो परिणाम क्या निकलेगा, सरकार रहेगी ही नहीं फिर सरकार के बिना कैसे सब चलेगा। उनके अनुसार साम्यवादी व्यवस्था के कारण प्रत्येक व्यक्ति इतना जिम्मेदार हो जाएगा कि ना पुलिस की जरूरत पड़ेगी ना प्रशासन की। दूसरी ओर गाँधी की कल्पना के स्वतन्त्र भारत का जो नक्शा था उसमें गाँधी ने कहा था 'ए फेडरेशन ऑफ ७०० थाउजन सॉवरजिन रिपब्लिक यानी सात लाख (विभाजन से पहले) गाँवों का सम्प्रभुतासम्पन्न महासंघ ही बापू के स्वतन्त्र

भारत की परिकल्पना था। याने प्रत्येक गाँव आत्मनिर्भर होगा। उसे तहसील या जिले से किसी प्रकार की निर्भरता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, वह स्वालम्बी होगा। **मेरे विचार से इसे ही गाँधी के ग्राम स्वराज की कल्पना कहा जा सकता है, जो पंचायती राज व्यवस्था लागू करके किये जाने का प्रयास किया गया, लेकिन देखने में यह आया है कि, वह अपने मूल उद्देश्य से कुछ भटक गया.....**

मैं वही कहना चाहता हूँ, ना तो भारत में गाँधी की कल्पना का स्वराज आया और ना ही रूस में मार्क्स की परिकल्पना लागू हो पाई। लेकिन अभी भी विश्व समाज की पुनर्संरचना पर बड़ा चिन्तन चल रहा है, क्योंकि मनुष्य सुखी रहना चाहता है। १९५४ में विश्व इतिहास के अध्येता एर्नाल्ड टयानबी भारत 'आये थे उन्होंने एक स्थान पर अपने भाषण में कहा था कि २० वीं सदी की शुरुआत पश्चिम से हुई थी, लेकिन यदि दुनिया को भविष्य में सुखी रहना है तो २१वीं सदी की शुरूआत भारतीय होना चाहिए। दुनिया में तमाम लड़ाइयाँ हुईं एक से बढ़कर एक योद्धा हुए । लेकिन युद्ध जीतने के बाद किसी योद्धा ने यह नहीं कहा जो अशोक महान ने कलिंग युद्ध के बाद कहा था– यह कैसी जीत है, चारों ओर खून की नदियाँ बह रही हैं, लाशों को गिद्ध नोंच रहे हैं यह तो मेरी सबसे बड़ी 'गलती है... यह जीत नहीं है और तब पश्चाताप स्वरूप यह बुद्धम् शरणम् गच्छामि हुआ था। अशोक का भारत, रामकृष्ण परमहंस का भारत और महात्मा गाँधी के सपनों का भारत तो खैर नहीं बन पाया, लेकिन विश्व के तमाम विद्वानों का आज भी यही मानना है कि भारतीय संस्कृति के माध्यम से ही दुनिया सुखी रह सकेगी।

भारतीय संस्कृति से ही उपजे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण की बात आजकल काफी चर्चा में है, इस सम्बन्ध में आपका क्या विचार है ? रविन्द्रनाथ टैगोर कहते थे, मेरा बंगाली के प्रति प्यार, मेरे भारत के प्रति प्यार के बीच में अड़चन नहीं है, उसी तरह भारत के प्रति मेरा प्यार या मेरी निष्ठा, इस विश्व के प्रति मेरी निष्ठा में अड़चन नहीं है... मानवजाति को यह विचार रखना बहुत जरूरी है। वैसे मैं स्वयं एक अपराध बोध से ग्रस्त हूँ कि जब मैंने सेवाग्राम में राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरुआत की थी तो वहाँ राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देने, राष्ट्रगान गाने आदि का चलन प्रारम्भ नहीं किया गया था। मैं सोचता था कि मुझे राष्ट्र से ऊपर उठना है। क्योंकि तब मेरे दिमाग पर अन्तर्राष्ट्रीयता हावी थी लेकिन अब मैंने यह गलती सुधार ली है। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों में अब, ध्वज वन्दन, राष्ट्रगान, वन्देमातरम् आदि सभी कुछ प्रारम्भ कर दिया है।

हालाँकि ओशो कहते हैं, राष्ट्र प्रेम दुनिया का नुकसान करता है, मैं कहता हूँ राष्ट्र प्रेम संकुचित प्रेम नहीं होना चाहिए, उसमें उदारभाव होना चाहिए। मेरी निष्ठा

हिन्दू धर्म के लिए हैं, यह ठीक है, लेकिन इससे इस्लाम के प्रति मेरे आदर में कमी नहीं होना चाहिए। राष्ट्रप्रेम होना अति आवश्यक है। लेकिन वह विश्व प्रेम के रास्ते में अड़चन नहीं होना चाहिये। मैं हिन्दू होकर भी विश्व नागरिक हूँ और यही हमारे दर्शन की मूल भावना भी है, 'वसुधैव कुटुम्बकम'। बचा पैदा होता है तो किसी को नहीं जानता है फिर धीरे–धीरे अपनी माँ को पहचानता है फिर, पिता को, फिर भाई बहिनों और परिवार के दूसरे सदस्यों को, फिर स्कूल जाता है अपने आसपास के लोगों को पहचानता है, फिर अपनी जाति अपने धर्म, अपने समाज को पहचानता है फिर नगर फिर देश ऐसे ही निरन्तर सिलसिला चलता रहता है। हिन्दू परिवार, विश्व परिवार का ही तो अंग है। इसलिए मैं हिन्दू होकर भी विश्व नागरिक बन सकता हूँ।

आजादी के ७० वर्ष के बाद राम राज्य स्थापना की बापू की परिकल्पना को आज आप कहाँ तक पहुँचा हुआ पाते हैं? १४–१५ अगस्त, १९४७ की रात्रि को भारत आजाद हुआ। प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर तिरंगा फहराया, उप प्रधानमन्त्री सरदार पटेल वहाँ उपस्थित थे, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे, कॉंग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद थे, यानी– सभी थे बस एक महात्मा गाँधी को छोड़कर। १५–१६–१७ अगस्त तीन दिन गाँधी उपवास करते रहे, सबको सम्मति दे भगवान, प्रार्थना करते रहे। क्योंकि गाँधी की कल्पना का स्वराज नहीं आया था, चारों ओर कत्लेआम मचा हुआ था। वो उससे बड़े दुखी थे आज भी अधिकांश लोग कहते हैं गाँधी ने भारत को विभाजित करा दिया, लेकिन यह सही नहीं है। बड़ी लम्बी कहानी है। गाँधी शताब्दि कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष भारत में, डॉ. आर. आर. दिवाकर थे और ब्रिटेन में लॉर्ड माउन्टबेटन थे । दोनों चेयरमैन जब इस सिलसिले में मिले तो डॉ. दिवाकर ने माउन्टबेटन के सामने बैठकर पूछा कि मैं यह तो समझ सकता हूँ कि आपने नेहरू और पटेल को विभाजन के बारे में समझा दिया, लेकिन आपने गांधी को कैसे इसके लिए राजी किया ?

लार्ड माउन्टबेटन ने कहा, डॉ. दिवाकर मैं जानता था गाँधी जी मानेंगे नहीं, लेकिन मैं बेचैन भी था मुझे इंगलैंड वापस लौटना था, वर्षों हो गये थे, मैं चाहता था कि आजादी दे दी जाए और मैं जल्दी अपने देश वापस लौट जाऊँ । इस बीच गाँधीजी नोआखाली चले गये और मुझे मौका मिल गया । मैंने एक– एक कर नेहरू, पटेल सभी को बुलाया और बताया कि अगर आप विभाजन के लिए सहमत नहीं होंगे तो हिन्दुस्तान आजाद नहीं हो सकेगा... जब गाँधी जी लौटे तो उन्होंने सबसे पूछा और जब सबने अपनी रजामन्दी बताई तो उन्होंने कहा–अब तो मैं अल्पमत में हो गया। इसलिये गाँधी को हम विभाजन के लिए जिम्मेदार नहीं मान सकते हैं। अमेरिकी

पत्रिका 'टाइम्स' ने जिन्ना पर एक कवर स्टोरी की थी । उसमें लिखा था, ११ सितम्बर, १९४८ को जिन्ना की मृत्यु के कुछ ही दिन पहले उन्होंने अपने डॉक्टर से कहा था कि मैंने अपने जीवन में पाकिस्तान को बनाकर सबसे बड़ी गलती की है। यानी जिना को भी इस बात का अन्दाजा नहीं था कि पाकिस्तान बनने से खून-खराबा होगा और आपसी वैमनस्य बढ़ेगा इतना १९२० में गाँधी जी ने चार मुख्य बात देश के सामने रखी थीं पहली एकता, धार्मिक एवं भाषाई, दूसरी बात जिसकी उन्हें बड़ी तकलीफ थी कि दुनिया में कहीं भी ऐसा नहीं है कि गन्दा करने वाला पवित्र माना जाए और उसे साफ करनेवाला अछूत माना जाए। तो उनका कार्यक्रम था कि यह अछूत शब्द शब्दकोश से निकल जाना चाहिए। तीसरा कार्यक्रम था कि अगर भारत में हरेक हाथ को काम मिलना है तो ग्रामोद्योग ही उसका हल है। खादी ग्रामोद्योग, क्योंकि बड़ी फैक्ट्रियों से बड़ी नौकरियाँ मिल जाएँगी लेकिन हर हाथ को काम नहीं मिलेगा। चौथी बात थी नशामुक्ति, आज होते तो भ्रष्टाचार को भी लेते, क्योंकि उन दिनों में यह थोड़ा बहुत था, लेकिन इसका इतना भयंकर आयाम नहीं था जो अब है। १९४७ में आजादी आई लेकिन इन चार बिन्दुओं पर कुछ खास नहीं हुआ। मैं तो आज भी अपने कैम्पों में युवाओं से कहता हूँ कि यह सोचो मैंने जो कुछ पाया, वो ठीक है लेकिन आज से २० साल बाद तुम्हारे बच्चों को इससे बेहतर भारत मिले, तुम्हें इसका प्रयास करना चाहिए। शान्ति, सद्भाव निरन्तर देश में कम होता जा रहा है देखिये क्या हो रहा है, काश्मीर में मुझे अभी अगले माह श्रीनगर जाना हैं सोचता हूँ कैसे क्या करूँगा वहाँ ? **जी हाँ मैं भी यही आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने प्रारम्भ से ही देश के युवाओं को ही परिवर्तन का माध्यम बनाया है, उन्हें एक सोच दी है, लेकिन वर्तमान में जितने अलगाववादी हालात देश में पैदा हो रहे हैं उनमें अधिकतर युवा ही शामिल हैं कश्मीर के युवा भी दिशा-भ्रमित हैं उनके ऊपर अलगाववादी शक्तियाँ हावी हैं हम इसके दुष्परिणाम भी देख रहे हैं। इस सबसे कैसे निबटा जाए?**

देखिये लड़का भूखा है, माँ आटा लाने बाहर नहीं जा पा रही है तो तनाव तो बढ़ेगा ना। लड़का पागल हो रहा है पंडित जी कहते है इसकी शादी कर दो, तो ठीक हो जाएगा, जिससे शादी होना है। वो लड़की कहती हैं, मैं पागल लड़के से कैसे शादी कर लूँ तो ऐसा है कि पहल कौन करे।

आपने तो पहले भी कश्मीर में कई कैम्प लगाए हैं तो वहाँ के युवाओं की सोच और बाकी हिन्दुस्तान के युवाओं की सोच में क्या आपने कुछ फर्क महसूस किया है?

दरअसल राष्ट्रीयता के बारे में उनको शिकायत है। यह बहुत बड़े स्तर पर सोचने का है कि काश्मीर को भारत का

हिस्सा मानने के लिए हम १०० प्रतिशत वोट देंगे क्योंकि हमको १०९ प्रतिशत कुश्मीर चाहिए । लेकिन वहाँ का सारा मुसलमान हमारा भाई है इसके लिए हम १०० प्रतिशत हिन्दुस्तानी तैयार नहीं। हमको चप्पा–चप्पा कश्मीर चाहिए लेकिन वहाँ का सारा मुस्लिम हट जाना चाहिए, यह आम लोगों का स्वप्न है, तो जब तक ऐसी विचारधारा रहेगी तब तक कश्मीर का मुद्दा हल होनेवाला नहीं है।

जिन्ना ने माँगा कश्मीर में अधिकांश मुसलमान हैं इसलिए ने उसे पाकिस्तान में जाना चाहिए, हैदराबाद का नवाब मुसलमान है उसे पाकिस्तान में शामिल होने देना चाहिए लेकिन नहीं हुआ, तो पाकिस्तान वो दर्द तो पाले ही है फिर बंगलादेश निर्माण को भी पाकिस्तान हिन्दुस्तान के द्वारा पाक का बँटवारा मानता है। जबकि वहाँ भी शुरुआत बांग्ला और उर्दू के भाषायी विवाद से हुई थी, यह रिकार्ड है इसलिये पाकिस्तान बदला लेने के लिए कश्मीर को मैदान मानकर अलगाववादी ताकतों को बढ़ावा दे रहा है। दुनिया में अमेरिका जैसे देशों का मोटे तौर पर यही मानना है कि कश्मीर में क्योंकि ज्यादातर मुसलमान हैं। इसलिये इसे तो पाकिस्तान में ही जाना चाहिए। पाक के पासपोर्ट में लिखा है इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान और हमारे पासपोर्ट में लिखा है रिपब्लिक ऑफ इंडिया, तो हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम पाकिस्तान से भिन्न हैं । यहाँ, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का राज नहीं है यहाँ इंसानों का राज है यह हमें साबित करना होगा। नागालैंड, असम, मिजोरम वहाँ पर तो ईसाई हैं आसाम के अलगाववादियों का नेता मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं है एक शुद्ध हिन्दू परेश बरूआ है, जो कभी बर्मा में तो कभी फिलीपींस में बैठकर अखवारों को लिखता रहता है । मेरा पत्र छापो नहीं तो अखबाउडा दूंगा तो वो मजबूर होकर छापेगा। नागालैंड में मध्यप्रदेश कैडर के एक आई. जी. मेरे एक कैम्प में गये थे वहाँ एकत्र युवाओं से बोले, आप स्वतंत्र होने की बात करते हैं, नागालैंड का सालभर का उत्पादन है तीन करोड़ का और खर्चा हैं १८ करोड़ का। हिन्दुस्तान १५ करोड़ रुपया दे रहा है तब तो तुम खाना खा रहे हो और तुम कहते हो आजाद हो जाओगे, तो क्या बनेगा तुम्हारा? एक छोटा–सा लड़का खड़ा होकर बोला सर हम हिन्दुस्तान के अन्दर हैं तो वह हमें १५ करोड़ दे रहा है जिस दिन हम स्वतन्त्र हो जाएँगे हिन्दुस्तान हमें २५ करोड़ देगा और चाइना हमें ४० करोड़ देगा। यानी बड़ी विकट परिस्थितियाँ हैं इसीलिये हम प्यार से ही जीत सकते हैं, बन्दूक के सहारे नहीं।

लगभग ५० वर्ष पूर्व आपने चम्बल घाटी के दुर्दान्त दस्युओं को आत्म समर्पण के लिए सहमत कर लिया था, लेकिन आज का ये अलगाववादी युवा आपकी बात नहीं मानता है क्या कारण है ?

देखिये, चम्बलघाटी का सन्देश यही है कि ५० हजार साल पहले भी शेर दूसरे जानवर को खाता था और आज भी खाता है. पहले इंसान भी जानवर को खाता था, लेकिन जब सभ्यता विकसित हुई और कृषि कार्य की शुरुआत हुई तो यह बात कही गई कि जब हम अपने भोजन के लिए स्वयं व्यवस्था कर सकते हैं तो हिंसा का सहारा क्यों लें? बाल्मीकी और अंगुलीमाल कि कहानी तो हमने सुनी थी पर यहाँ यह सब हमने अपनी आँखों के सामने देखा। विनोवा जी तो इनसे कहते थे इन कर्मों का फल या तो यहाँ भुगत लो या फिर वहाँ भुगतना। इनका कहना रहा हम तो यहीं भुगतेंगे भले ही हमें फाँसी दे दी जाए ..हालाँकि हमने बाद में फाँसी माफ करा दी थी सरकार से । – मनुष्य बदल सकता है और उसे बदलना ही होगा। प्रयास निरन्तर जारी रहना चाहिए ये युवा भी एक दिन सही रास्ते पर आएँगे।

सुदूर दक्षिण से यहाँ मध्यप्रदेश के बीहड़ों में आकर चम्बल की समस्या के समाधान का विचार कैसे बना था? १९५२–५३ की बात है मध्यभारत सेवादल के चार भाई हमें एक बार अम्बाह की इंटीरियर में अपने घर ले गये, वहाँ डांग में मानसिंह का गिरोह पड़ा हुआ था। हमने कहा चलो मिलते हैं हम गये बन्दूकें तो सभी लोग लिये हुए थे, फ़र्क ये था कि डकैत पुलिस की वर्दी पहने हुए थे हम उनसे मिले, प्यार से बातचीत की उसी समय लगा कि इन्हें प्यार के सहारे जीता जा सकता है। हमारी कोई योजना नहीं थी सब कुछ अपने आप घटता रहा। १९६० में विनोवा भावे जी के सामने मानसिंह वगैरह ने आत्म समर्पण किया भिंड में, फिर १९७२ में यहाँ माधोसिंह, मोहर सिंह ने, १९७४ में उत्तर प्रदेश के बटेश्वर में वहाँ के दस्युओं ने समर्पण किया । फिर राजस्थान के सी.एम. ने खोजकर बुलाया तो राजस्थान के डकैतों को धौलपुर में समर्पण कराया। लगभग ६५४ बागियों का समर्पण अब तक कराया जा चुका है। **आप पूरे विश्व में घूमते रहते हैं, कार्यकर्ता ही आपका परिवार है आपने स्वयं का परिवार तो बसाया नहीं, लेकिन हमने सुना है कि आपने प्रारम्भिक प्रेरणा अपने पिताजी से पायी थी.....**

मेरे पिता जी तो बिलकुल निर्लिप्त किस्म के व्यक्ति थे। हम ६ भाई और २ बहिने हैं। उन्होंने कभी पूछा नहीं कि कहाँ गये थे क्या किया, मेरे भाईयों में से कोई इंजीनियर बना कोई कुछ और मैंने सोचा मैं वकालत पढ़ूँगा । जैसे ही वकालत की पढ़ाई पूरी हुई तो दिल्ली से डॉ. हार्डीकर का पत्र मिला, १९५१ में मुझे बुलाया कि हमारे यहाँ आ जाइए तब से सेवादल से जुड़ गया। बाद में काँग्रेस के विभाजन पर सेवादल छोड़ दिया और गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान से जुड़ गया।

आपके इस अभियान की मशाल को आगे चलकर कौन थामेगा ?

बहुत से लोग तैयार हो रहे हैं, लेकिन किसी एक को ऐसी कोई जिम्मेदारी देने का अभी

नहीं सोचा है।

गाँधी जी से प्रेरित स्वच्छ भारत अभियान को सही मायने में सफल बनाने के लिए क्या कुछ करना चाहिए ? साफ-सफाई रखना तो हम सबका धर्म है। राजीव गाँधी के साथ एक बहुत बड़ा आयोजन हुआ था, २०वीं शताब्दि की उपलब्धियों के बारे में। प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई, वहाँ एक सवाल मुझसे पूछा गया कि २१ वीं शताब्दि के लिए आपकी प्राथमिकता क्या है? मैंने कहा, २१ वीं शताब्दि के लिए मेरी प्राथमिकता है कि कोई भी हिन्दुस्तानी बाहर शौच नहीं जाएगा। पत्रकारों ने कहा आप तो मज़ाक कर रहे हैं। मैंने कहा नहीं, मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ मैं इस विषय पर गम्भीर हूँ। तो यह कोई नई बात नहीं है, और इसके लिए गाँधी को याद करने की जरूरत भी नहीं है सब कुछ अन्दर से स्वप्रेरणा से होना है। हमारे नौजवानों को अन्दर से यह प्रेरणा, होनी चाहिए कि मैं भारतमाता का सपूत हूँ मेरे हाथ से कोई गलत काम नहीं हो सकता है, मुझे भारतीय होने पर गर्व है। क्योंकि मैं स्वयं ब्रह्म हूँ अपने आप को याद करो मेरे में कोई कमी नहीं है, यह भावना हमारे एक एक बचे में आनी चाहिए ताकि वो शक्तिशाली बने और देश में कोई गलत काम ना हो। दिन के २४ घंटों में से एक घंटा देह को और एक घंटा देश को दो । आप नाचीज नहीं हैं आप भगवान के स्वरूप हैं बस यही विश्वास भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करेगा।

मो.: ०९४२५७७५२६०

काव्य भारती

पर इंसान परेशान बहुत है

अच्छी थी पगडंडी अपनी ।
सड़कों पर तो जाम बहुत है ।।
फुर्र हो गई फुर्सत अब तो ।
सबके पास काम बहुत है ।।
नहीं जरूरत बूढ़ों की अब ।
हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है ।।
उजड़ गए सब बाग बगीचे ।
दो गमलों में शान बहुत है ।।
मट्ठा, दही नहीं खाते हैं।
कहते हैं जुकाम बहुत है ।।
पीते हैं जब चाय तब कहीं ।
कहते हैं आराम बहुत है। ।
बंद हो गई चिट्ठी, पत्री ।
फोनों पर पैगाम बहुत है ।।
आदी हैं ए.सी. के इतने ।
कहते बाहर घाम बहुत है ।।
झुके-झुके स्कूली बच्चे ।
बस्तों में सामान बहुत है ।।
सुविधाओं का ढेर लगा है।
पर इंसान परेशान बहुत है ।।

संग्रहित

जन मन तक गांधी को पहुँचाए !

– प्राचार्य सुभाष शास्त्री

गांधीजी के विचार सार्वकालिक और सार्वभौमिक है, उनके सर्वोदय (अंत्योदय), स्वच्छता प्रेम,और साधन शुचिता इन तत्वों का आचरण निश्चित ही सार्वजनिक उन्नति का समर्थ मंत्र है । अंतिम मनुष्यतक हर तरह से उत्कर्ष–उद्धार की दृष्टिसे समाज में प्रयत्न इमानदारी से होना चाहिये । उन्होंने स्वच्छता का संदेश खुद के अनुभव से दिया । पहले अपने आचरण में लाया । हर तरह का गंदा साफ करना हर मनुष्य का काम है, यह मैला ढोने का काम दूसरों से करवाना वे अत्यंत निषिध्द मानते थे । अपने जीवन में हर प्रकार का काम हमें नियमानुसार संपूर्णता के साथ और शुध्द मन से करना चाहिये ।

'सत्य' का प्रभावी आचरण अपने जीवन में गांधीजी ने व्रतस्थ होकर किया । कई बार उनसे गलतियाँ हुई, गलतियों को बाद में मान लेते थे और पश्चाताप व्यक्त करते थे । उनके मन, कर्म, शब्द सत्यपूर्वक आचरण में आते थे । सत्य के लिए निरभिमान, नम्रतायुक्त, अहिंसा से आतःप्रोत, प्रेम, पावित्र्ययुक्त निर्मल मन की आवश्यकता है । इसी सत्य के प्रयोग एवं आराधना करते हुए उन्होंने ईश्वरतक जाने का अनिवार्य मार्ग अपने हर आचरण से जगत के सामने रखा ।

आज उनके आदर्शों को लेकर कोई चर्चा नहीं पर उनके नाम एव विचार–कार्य के लेबल का उपयोग अपनी राजकीय प्रणालि में कर रहे हैं , लेकिन उसमें श्रध्दा बिलकुल नहीं है । यही अत्यंत दुर्दैवी बात है । गांधीजी के विचारों को लेकर उनका तथा अन्यों का लिखा साहित्य जो जगत के लिए आदर्श है, विशाल है । उसका चिंतन तथा आचरण आज अत्यंत अपरिहार्य हो गया है।

विशेष समाचार

सोलापूर में स्व. सदाविजय स्मृति विशेषांक विमोचन तथा आंतर भारती, सोलापूर की स्थापना

सोलापूर–चनशेट्टी गुरूजी प्रतिष्ठान संचलित म. गांधी ग्लोबल व्हिलेज संकुल, बोरामणी में स्व. सदाविजय आर्य के प्रथम स्मृति दिन के अवसर पर अंतरभारती मासिक का सदाविजय आर्य स्मृति विशेषाक–विमोचन तथा आंतर भारती सोलापूर शाखा की स्थापना की गयी । प्रास्ताविक में प्राचार्य उमाकांत चनशेट्टी ने सदाविजयजी की यादे विशद की। अध्यक्ष डॉ. इरेश स्वामीने परहित भावना ही श्रेष्ठ धर्म है कहा ।

राष्ट्रीय आंतर भारती के कार्याध्यक्ष अमर हबीब ने आज की समाज व्यवस्था तथा आंतर भारती की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किये । प्राचार्य सुभाष शास्त्री ने विशेषांक के विषय में मंतव्य दिया।मधुश्री आर्य , विलासभाई शहा, सुरेश पुरी ने भी अपने विचार रखें। आंतर भारती, सोलापूर के पदाधिकारी के रूप में प्राचार्य सुभाष शास्त्री (अध्यक्ष) अॅड. प्रमोद शहा (उपाध्यक्ष) अरूण धुमाळ (कार्यवाह) तथा दीनानाथ रत्नपारखी (कोषाध्यक्ष) चुने गये । सदस्य के रूप में सुनील व्हसाळे, गणेश लेंगरे, डॉ. राजशेखर नळगे, प्रा. रफिक मणियार,डी.आर. नागणसुरे, संध्या कुनाळे, डॉ. जयश्री मेहता विजया बिराजदार, सीमा अंजुटगी, वर्षा देवकते, हरिश्चंद्र कदम, मनोज व्हटकर, रोहिणी पावडशेट्टी, रश्मि पुरवत, अमिता जावळे, अजिता पिल्लै, लक्ष्मी रेड्डी, मनोनीत किये गये । सूत्रसंचालन मल्लिनाथ जवळकोटे ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. चनशेट्टी ने किया । इस अवसर पर डॉ. डी.एस. कोरे, विलासभाई शहा, सुरेश पुरी, व.म. सूर्यवंशी, डॉ. शिवाजी आपटे, अतुल कोटा, मनीषा आर्य, सदाविजय आर्य के परिवार सदस्य , आंतर भारती के सदस्य तथा साने गुरुजी प्रेमी शिक्षक उपस्थित थे ।

(फोटो कवर पृष्ठ २,३ पर)

म. गांधी ग्लोबल व्हिलेज, सोलापुर में संपन्न कार्यक्रमविशेष- आंतरभारती (हिंदी-मासिक) का स्व. सदाविजय आर्य स्मृति विशेषांक विमोचन तथा आंतरभारती, सोलापुर शाखा की कार्यकारिणी-चयन संबंधी चित्र

अक्तूबर 2023 पंजीकरण 11257/66
डाक पंजीकरण : L2/RNP/OMD/71/2021-23

अंबाजोगाई में संपन्न स्नेहसंवर्धन पुरस्कार समारोह

सत्कारमूर्ति
मा. नरपती कुजेडा

प्रमुख अतिथि
मनिषाराणी आर्य

आंतरभारती अंबाजोगाईचे
अध्यक्ष दत्ता वालेकर

अंबाजोगाई में कार्यकर्ता पुरस्कार वितरण

वसमत में स्नेहसंवर्धन पुरस्कार समारोह